अपनापन रखना, मेरे घनश्याम ।
घड़ी-घड़ी पल-पल नाम तिहारो,
रटे मेरी रसना, मेरे घनश्याम ।
लली-लाल दोउ दै गरबाहीं,
हमारे हिये बसना, मेरे घनश्याम ।
भाव-हिंडोरे डारि हिये में,
झुलावूँ नित झुलना, मेरे घनश्याम ।
दै उपहार हार अँसुवन को,
बना लूँ तुझे अपना, मेरे घनश्याम ।
कैसेहुँ करि 'कृपालु' प्रभु अपनो,
पुरवो मम सपना, मेरे घनश्याम ॥

भावार्थ-

हे मेरे श्यामसुन्दर ! अपने अकारण करुण विरद की सदा ही रक्षा करना अथवा हे मेरे श्यामसुन्दर ! तुम मुझे सदा ही अपना समझना । हे श्यामसुन्दर ! मेरी यही कामना है कि मेरी जिह्वा प्रत्येक क्षण तुम्हारे नामों की रटना लगाया करे । हे श्यामसुन्दर ! हे वृषभानुनन्दिनी ! तुम दोनों गले में हाथ डाले हुये हमारे हृदय में नित्य ही निवास करना । हृदय में विविध भावों के झूले में मैं तुम दोनों को नित्य ही झुलाया करूँ एवं आँसुओं की माला की भेंट देकर मैं तुमको सदा के लिये अपना बना लूँ । **'कृपालु'** कहते हैं कि हे श्यामसुन्दर ! किसी भी प्रकार से मुझको अपना बनाकर मेरी इस कामना को पूर्ण करो ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिषत्